दादी माँ की कहानियाँ

म.क.रैना

Image Courtesy :
studentshow.com

Grandma's Stories
दादी माँ की कहानियां - नानि हुंज़ु कथु

[Content Source: käshír talmíh & käshír lúkû kathû ~ Publications of J&K Academy of Art, Culture & Languages. Transliteration & Re-written for Children by M.K.Raina]

Note : Main aim of this work is to bring old Classic Kashmiri literature closer to our younger generations. Stories reproduced in Kashmiri language here are written in Devanagari-Kashmiri Script to reach those Kashmiri Pandits who are not well versed with the Nastaliq Script. It may be noted here that J&K Academy's works are already in Nastaliq Script and need not be reproduced again in that script.

- M.K.Raina

Image : 1mobile.com

रोटी के बदले स्वर्ग

रोज़ की तरह बच्चे शाम को अपनी दादी माँ जिसे वह प्यार से काकन्य जिगुर कहते थे, के पास आकर बैठ गये और उन्हें कहानी सुनाने का आग्रह किया। दादी माँ भी तैयार ही थी। आज की कहानी हिंदी में थी। बच्चे आमने सामने बैठ गये और दादी माँ शुरू हो गई। 'सुनो बच्चो, आज जो कहानी मैं आप को सुनाने जा रही हूँ उस का नाम है रोटी के बदले स्वर्ग। ध्यान से सुनो।'

दपान, हारून रशीद अरब देश का एक खलीफा था। उस का एक भाई था, नाम था बहलूल। बहलूल एक सीधा सादा आदमी था पर था भिखारी। भीख मांग कर जीवन व्यतीत करता था। एक दिन वह वहाँ के राजा के महल में गया और खाने के लिये कुछ मांगा। उसके गंदे कपडे देख और महलखाने के अंदर बिना पूछे आने पर राजा को गुस्सा आया। उस ने दरबारियों को कह कर बहलूल को बाहर निकलवा दिया। राजा ने उसका उपहास भी बहुत किया।

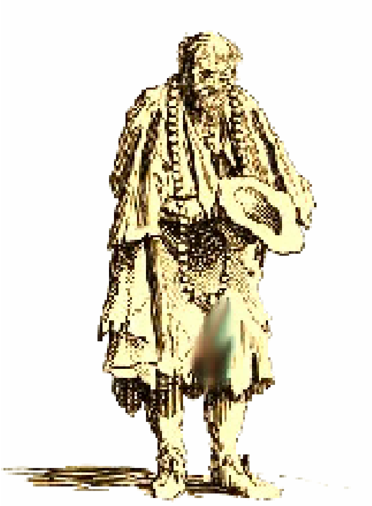

‘यह तो बहुत बुरा हुआ’बबलू ने दादी माँ को बीच में टोक कर कहा।

‘हाँ, बुरा तो हुआ पर राजा किसी की बात नहीं सुनता था। राजा था ना!’दादी माँ ने समझाया।

‘फिर क्या हुआ?’ राजू ने पूछा।

‘फिर यह हुआ कि दूसरे दिन बहलूल जंगल में गया।’ दादी माँ आगे की कहानी सुनाने लगी।

भूख और प्यास से बहलूल तड़प रहा था इसलिये एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ कर सोने की कोशिश करने लगा। उसे नींद न आई। अचानक उठ कर उसने लकडी के कुछ टुकडे जमा किये और उन्हें ज़मीन के अंदर एक खास अंदाज़ में ठोंकने लगा। उसके सामने से बग्घी में बैठी वहां की रानी जा रही थी।

रानी ने उसे देखा और बग्घी से नीचे उतर गई। रानी को राजा के हाथों बहलूल का अपमान होने की सारी बात का ज्ञान था।

'तो रानी ने राजा को क्यों नहीं समझाया?' बिल्लू ने दादी माँ से पूछा।

क्योंकि राजा किसी की बात नहीं सुनता था। राजा था ना!' यह कर कर दादी माँ आगे की कहानी सुनाने लगी।

रानी ने बहलूल से पूछा, 'दरवेश, क्या कर रहे हो?'

बहलूल ने जवाब दिय। 'स्वर्ग बना रहा हूँ।'

रानी ने पूछा, 'स्वर्ग को बेचोगे क्या?'

बहलूल ने कहा, 'क्यों नहीं?'

रानी ने पूछा, 'क्या मोल लोगे?'

बहलूल ने जवाब दिया, 'एक रोटी।'

रानी को मालूम था कि बहलूल की बातों का कोई मतलब नहीं है। वह जानती थी कि बहलूल भूखा है और एक रोटी पाने के लिये वह यह नाटक कर रहा है। रानी ने उसे एक रोटी दे दी। वह भी भूखे को कुछ खिलाना चाहती थी। बहलूल ने लकड़ियों की एक गठरी बना दी और रानी को सोंप दी।

महल में पहुँच कर रानी ने राजा को पूरी बात बता दी। राजा ने लकडी के टुकड़ों को घृणा से देखा और रानी की मूर्खता पर हंस पड़ा। रानी कुछ नहीं बोली। उसने लकडी की गठरी को सलीके से टाँड पर रख दिया।

‘फिर क्या हुआ ?’ राजू ने पूछा।

फिर यह हुआ कि रात को राजा गहरी नींद सो रहा था। उसने एक सपना देखा। उसने देखा कि वह एक ऊंची पत्थर की दीवार के सामने खड़ा था।

Image: lightforcenetwork.com

दीवार में एक बडा द्वार था। द्वार के सामने दो पहरेदार खड़े थे। राजा ने दूर से ही द्वार की दरार से अंदर झांक कर देखा। सामने एक विशाल और सुंदर बाग था जिस में नाना प्रकार के वृक्ष और उन पर फल फूल लगे थे। बाग के बीच में स्वच्छ पानी व मधु की नदियाँ बह रही थीं। वृक्षों के ऊपर सुंदर रंग बिरंगी पक्षी चहचहा रहे थे। अति सुंदर दृश्य था। वास्तव में स्वर्ग लग रहा था।'

'स्वर्ग कैसा होता है?' पिंकी ने दादी माँ से पूछा।

'स्वर्ग बहुत ही सुंदर होता है। हमारी कल्पना से भी सुन्दर।'दादी माँ ने जवाब दिया। 'आगे की कहानी सुनो।'

राजा ने फिर ध्यानपूर्वक देखा। दूर, एक विशाल वृक्ष के साये में एक औरत राजसी वेषभूषा और हीरे जवाहरात पहने एक सुंदर सिंहासन पर विराजमान थी। सिंहासन सोने का बना था। उसके सामने, सुंदर वेशभूषा में उसकी सेविकायें हाथ जोडे खड़ी थीं। राजा सिंहासन पर विराजे उस औरत को देखना चाहता था। उसने पहरेदारों से विनती की कि उसे थोड़ा सा और द्वार के निकट आने दिया जाये। पहरेदार मान गये।

Garden Image: infoindiadirect

राजा ने द्वार के पास आकर ध्यान से उस औरत को देखा और हैरान हो गया। वह औरत उसकी रानी थी और उस के चेहरे पर एक रहस्यमय मुस्कान थी। राजा ने पहरेद्वारों से पूछा, 'यह कौन सी जगह है और वह औरत कौन है।'

पहरेदारों ने बताया, 'यह स्वर्ग है और वह औरत इस स्वर्ग की मालकिन है। उसने कल ही इस स्वर्ग को खरीद लिया है।' राजा बहुत खुश हुआ। वह चिल्ला चिल्लाकर पहरेदारों को बताना चाहता था कि वह मालकिन उसकी रानी है। ज्योंही उसने यह बताने के लिये मुंह खोला, वह नींद से जाग गया। वह अब भी अपने महल के अंदर अपने ही पलंग पर सो रहा था। राजा ने सामने देखा। उसकी रानी अपने पलंग पर सो रही थी लेकिन उसके चेहरे पर वही मुस्कान थी जो राजा ने उसके चेहरे पर स्वर्ग के अंदर देखी थी।

बच्चे कुछ न बोले। वह ध्यानपूर्वक कहानी सुन रहे थे।

दूसरे दिन राजा जंगल में उसी जगह पहुँचा जहाँ रानी ने उसे बताया था। बहलूल अब भी ज़मीन के अंदर लकडियाँ ठोंकने में व्यस्त था। राजा बग्घी से नीचे उतरा और उसने बहलूल से पूछा, 'दरवेश, क्या कर रहे हो?'

बहलूल ने कहा, 'स्वर्ग बना रहा हूँ।'

राजा ने पूछा, 'बेचोगे क्या?'

बहलूल ने जवाब दिया, 'हाँ, बेचूँगा।'

राजा ने पूछा, 'क्या दाम लोगे?'

बहलूल ने जवाब दिया, 'सात राजाओं के सात खज़ाने।'

राजा सकते में आ गया। उसने कहा, 'पर कल तो आप ने एक रोटी के बदले में बेचा था।'

बहलूल ने कहा, 'हाँ बेचा था, पर उसने बिना देखे ही खरीद लिया था। उसे यह कहाँ मालूम था कि मैं क्या बेच रहा हूँ। वह तो केवल मुझे रोटी खिलाना चाहती थी। आप सब कुछ अपनी आंखों से देख कर आ चुके हो ना!'

दपान, राजा मुँह लटकाये वहाँ से चला गया।

कहानी सुना कर दादी माँ ने कहा, 'आज की कहानी खत्म। कल शाम को समय पर आना नई कहानी सुनने के लिये।' बच्चे खुश हो कर सोने के लिये चले गये।

Copyright: M.K.Raina